Causes of Alcoholism

मद्यपान के कारण के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित कारकों का उल्लेख किया है —

(i) जैविक कारक → मद्यपानता का एक कारण अनुवंशिकता भी है। इस सम्बन्ध में गुडविन एवं उनके सहयोगियों (1971) ने अपने अध्ययन के आधार पर पाया कि शराबी माता-पिता के बच्चों को जब शराब नहीं पीने वाले अभिभावक के संरक्षण में रखकर पाला-पोसा गया तो भी इन बच्चों के वयस्क होने पर इनमें शराब पीने की प्रवृत्ति अधिक देखी गई।

(ii) बुरी संगति → प्रायः देखा जाता है कि जो बच्चे मद्यपान करने वालों की संगति में होते हैं, वे धीरे-2 पियक्कड़ बन जाते हैं।

(iii) जीवन के प्रति घोर निराशा → कैफर (1971) के अनुसार जब कोई व्यक्ति कठोर व प्रतिबलक स्थितियों से बार-2 निराश व हताश हो उठता है, उसमें प्रायः जीवित रहने व जीवन के भारी कष्टों का भार उठाने की इच्छा शेष नहीं रह जाती है, तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति मद्यपान की ओर अग्रसर होने लगता है।

(iv) पराश्रितता की आवश्यकता की संतुष्टि → पराश्रित रहने वाले व्यक्ति जब कुण्ठा व दुश्चिन्ता की स्थिति में फँस जाने पर व इस सम्बन्ध में दूसरों से आवश्यक सहायता नहीं मिलने पर प्रायः मद्यपान के द्वारा ही अपनी पराश्रितता की आवश्यकता की संतुष्टि करते देखे जाते हैं और शनैः-2 इसके व्यसनी बन जाते हैं।

(v) सामाजिक-सांस्कृतिक कारक → कुछ अध्ययनों में यह देखा गया है कि मुस्लिम मोरमोन तथा यहूदी में मद्यपानता कम देखी गई है क्योंकि इनके संस्कृति में मद्यपानता को बुरा मानकर उससे दूर रहने की सलाह दी जाती है। इसी तरह फ्रांस में मद्यपानता दुनिया के सभी देशों में व्याप्त मद्यपानता से अधिक पाया गया है क्योंकि वहाँ की संस्कृति में ऐसी चीजों को बुरी नजर से नहीं देखा जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि मद्यपानता का कोई निश्चित तथा सामान्य कारण नहीं है। फिर भी इतना सत्य है कि मद्यपान वास्तव में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा जैविक कारकों की जटिल अन्योन्यक्रिया का परिणाम है।

Treatment & [illegible]

मद्यपानता के उपचार के लिए जैविक उपाय एवं मनो-
-सामाजिक उपाय का उपयोग किया जाता है
जैविक उपायों में प्रशांतक दवाएं तथा
क्लोरोडियाजेपोक्साइड का प्रयोग किया जाता है।
इसके प्रयोग से व्यक्ति में क्रियात्मक उत्तेजना, वमन, कै,
प्रत्याहारी उन्माद जैसे लक्षणों पर काबू पाया जाता है।
मनोसामाजिक उपायों में समूह चिकित्सा,
व्यवहार चिकित्सा, तथा अल्कोहलिक एनोनिमस (AA)
प्रधान है। आधुनिक समय में AA के परिणाम काफी
अच्छे मिले हैं। AA की शुरुआत 1935 में बोब
एवं बिल द्वारा किए गये।